थैलेसीमिया

[स्रोत: हिंदुस्तान टाइम्स](#)

दिल्ली सरकार के अस्पतालों में **डेसफेरल (डिफेरोक्सामाइन)** औषधि की गंभीर कमी के कारण **थैलेसीमिया** से ग्रसित रोगियों को आयरन ओवरलोड से अन्य **गंभीर जटिलताओं** का खतरा हो गया है, क्योंकि यह औषधि ऐसे रोगियों के लिये अत्यावश्यक जिनके लिये मुखीय चिलेटर्स असह्य होता है।

- **थैलेसीमिया** एक रक्त संबंधी आनुवांशिक विकार है जो शरीर की सामान्य हीमोग्लोबिन उत्पादन की क्षमता को कम कर देता है, जिसके परिणामस्वरूप स्वस्थ **लाल रक्त कोशिकाओं** की संख्या कम हो जाती है और **एनीमिया** हो जाता है ।
- **इसके लक्षण, आरंभिक दशाओं** में, काय की संवृद्धि संबंधी समस्याएँ, **विलंबित यौवनारंभ** तथा अस्थियों में असामान्यता एवं इसके गंभीर मामलों में भूख न लगना, **पीलिया, मूत्र का रंग गाढ़ा होना एवं चेहरे की अस्थियों का असामान्य विकास शामिल है।**

थैलेसीमिया के प्रकार:

- **अल्फा थैलेसीमिया**: यह रोग माता-पिता दोनों से प्राप्त दोषपूर्ण अल्फा-ग्लोबिन जीन के कारण होता है।
  - इसमें रोग की गंभीरता दोषपूर्ण जीन की संख्या पर निर्भर करती है।
- **बीटा थैलेसीमिया**: यह **बीटा-ग्लोबिन जीन में दोष के कारण** होता है।
  - दोषपूर्ण जीन की संख्या और प्रकार के आधार पर इसके लक्षणों की प्रवणता आरंभिक से लेकर गंभीर तक हो सकती है।
- **अनुमानतः वैश्विक स्तर पर प्रत्येक 10,000 जीवित जन्मों में से 4.4 बच्चों के इस रोग से प्रभावित होने के साथ** संपूर्ण विश्व में लगभग 280 मिलियन लोग थैलेसीमिया से ग्रसित हैं।

और पढ़ें: **थैलेसीमिया बाल सेवा योजना**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/thalassemia-2